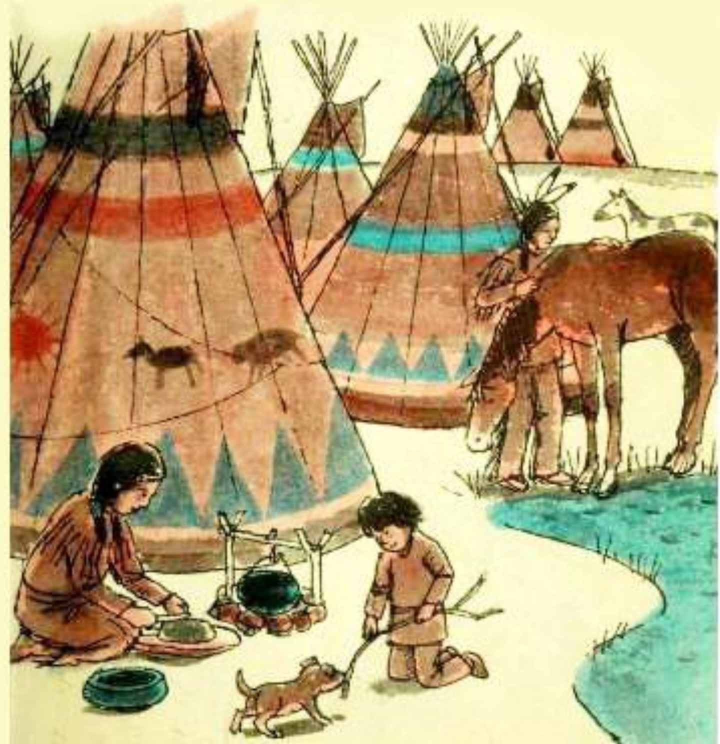
शिकारी रनिंग आउल



शिकारी रनिंग आउल



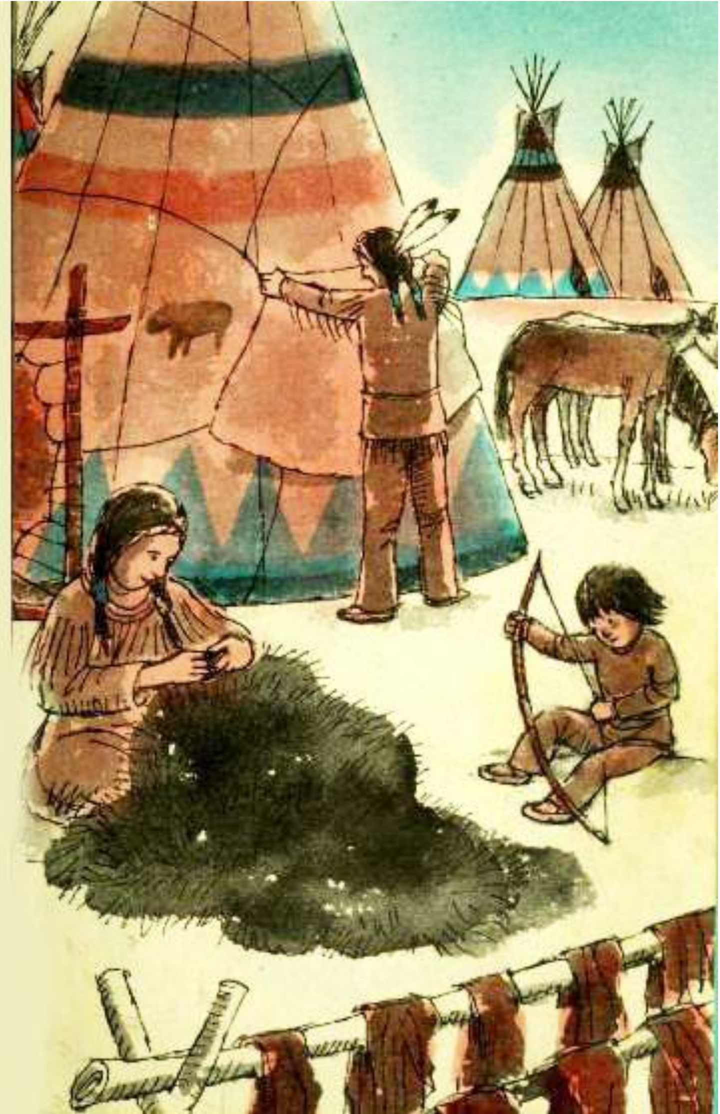
रनिंग आउल एक छोटा लड़का था
और पश्चिमी मैदानों में स्थित
आदिवासियों के एक गाँव में
अपने माता और पिता के साथ रहता था.





उसके पिता और गाँव के अन्य आदमी हिरणों, भैंसों, गरुड़ों और ख़रगोशों का शिकार करते थे. वह हर उस जानवर का शिकार करते थे जो खाया जा सकता था, पर सबसे अधिक शिकार वह भैंसों का करते थे.

भैंस का शिकार करने के बाद,
जब सब लोग पेट भर खा लेते थे,
औरतें बचे हुए मांस को काट कर
सुखाने के लिये टाँग देती थीं.
उसकी खाल से वह कपड़े बना लेती थीं.
उसकी नसों से वह प्रत्यंचा बनाते थे.
उसकी चमड़ी का तंबू बनाने में
उपयोग करते थे.
संक्षेप में कहें तो
वह लोग भैंस के हर भाग का
कुछ न कुछ
उपयोग अवश्य कर लेते थे.





जब उसका पूरा उपयोग हो जाता था
तब भैंस ने जो कुछ उन्हें दिया था,
उसके लिये उसका धन्यवाद करते हुए,
उसकी खोपड़ी को एक टीले
पर पूर्व दिशा की ओर घुमा कर
वह लोग रख देते थे.

रनिंग आउल की
बड़ी इच्छा था कि वह भी
भैंसों के शिकार में भाग ले.
उसने पिता से कहा.
लेकिन पिता बोले,
“तुम अभी इतने बड़े नहीं हुए.
तुम्हें चोट लग सकती है!”



“मुझे चोट कैसे लग सकती है?”
रनिंग आउल ने कहा.
“मैं घोड़े की सवारी कर सकता हूँ.”
“तुम गिर सकते हो और
भैंसों के खुरों के नीचे आ सकते
हो,” पिता ने कहा.





“अगर कुछ सौ भैसों के पाँव
के नीचे आ गये तो
तुम्हें चोट लग सकती है.”
“पुफ,” रनिंग आउल ने कहा,
लेकिन इतनी ज़ोर से नहीं कि
उसके पिता सुन पाते.
“देखते हैं कि कौन बहुत छोटा है
और कौन नहीं.”

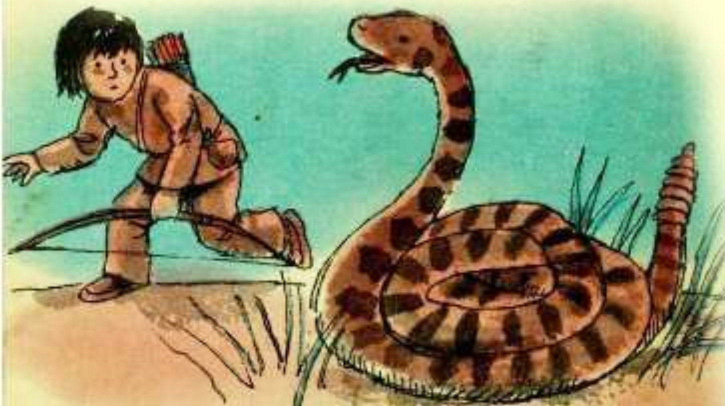


अगली बार जब
सब शिकार करने गये तो
रनिंग आउल ने तय किया कि
वह अलग से शिकार करने जाएगा.

उसने अपना धनुष और बाण उठाये
और चल पड़ा.
वह यह नहीं जानता था कि
वह किस पशु का शिकार करेगा
पर किसी का भी शिकार करने के
लिए वह तैयार था.



शिकार के लिए किसी पशु को
ढूँढने में उसे कठिनाई हुई.
उसने एक नाग देखा,
लेकिन नाग उस पर फुफकारने लगा
और कुंडली मार कर
हमला करने को
तैयार हो गया. उसके दाँत
तीरों जितने बड़े लग रहे थे.
“आज मैं नाग का शिकार नहीं करूंगा,”
उसने सोचा.
“किसी और दिन, शायद.”





उसने एक प्रेयरी डॉग देखा.
इसके पहले कि वह
पास आकर उस पर
तीर चला पाता, प्रेयरी डॉग कूद कर
अपनी बिल में घुस गया.



उसने हिरणों का एक झुंड देखा,
लेकिन हिरण कूदते हुए भाग खड़े हुए,
और इसके पहले कि वह
कमान में तीर चढ़ाता
वह सब गायब हो गये.



खरगोश झाड़ियों के पत्ते खा रहा था.
जैसे ही तीर उसके पास से गुज़रा
उसने 'व्हिश' की आवाज़ सुनी.
उसने आसपास देखा.
"क्या तुम मुझ को तीर मार रहे हो?"
उसने पूछा.



फिर उसने एक खरगोश देखा.
रेंगते हुए वह उसके जितना निकट
आ सकता था, आ गया.
फिर उसने एक तीर मारा.

“हाँ,” रनिंग आउल बोला
और उसने दूसरा तीर निकाला.
“मूर्खता मत करो,” खरगोश ने कहा.
“तुम लाख वर्षों में भी
मुझे तीर न मार पाओगे.”
“ओह, नहीं?” रनिंग आउल ने
ध्यान से निशाना साधा और तीर मारा.





इस बार खरगोश
सीधा हवा में उछला और
तीर उसके नीचे से निकल गया.
गुस्से में आकर रनिंग आउल ने
एक-एक कर अपने सारे तीर मारे.
लेकिन खरगोश बस
कूदता रहा
और उसे कोई तीर न लगा.

“कोई आसान शिकार ढूँढो,”
खरगोश ने कहा, और पत्तियां चबाने लगा.
“कोई बड़ा और सुस्त जानवर,
जैसे कि एक गाय.”



जितने तीर रनिंग आउल ढूँढ़ पाया
उतने उसने उठा लिया
और पैर पटकता हुआ किसी और
शिकार की तलाश में चल दिया.
जब वह जाने लगा तो खरगोश ने कहा,
“भाग्य तुम्हारा साथ दे”
पर उसने कोई उत्तर न दिया.





फिर उसे याद आया कि
किस तरह एक दिन उसके पिता ने
एक गरुड़ पकड़ा था.
“मुझे भी वही करना होगा,”
उसने सोचा. “मुझे भी बालों में
गरुड़ का एक पंख लगाना होगा.
फिर मैं शिकारी लगूँगा और
फिर मैं शिकार कर पाऊँगा.”



फिर उसने सूखे मांस का वह टुकड़ा,
जो वह खाने के लिये लाया था,
डालियों के ऊपर रख दिया.
फिर सरक कर वह उस गड्ढे में
घुस गया और पीठ के बल लेट गया.
फिर कुछ और झाड़ियाँ ऊपर रख दीं
और उनके नीचे पूरी तरह छिप गया.
वह आकाश को देख सकता था
और डालियों के बीच से अपने हाथ
बाहर निकाल सकता था,
पर उसे कोई न देख सकता था.

जैसे उसके पिता ने किया था
वैसे ही उसने एक गड्ढा खोदा.
उस गड्ढे को उसने
झाड़ियों और डालियों से ढक दिया.



फिर वह प्रतीक्षा करने लगा
कि कोई गरुड़ ऊपर रखा
मांस खाने आये.
गड्ढे के अंदर गर्मी बढ़ गयी
पर वह प्रतीक्षा करता रहा.
उसके ऊपर मिट्टी गिरी पर
वह तनिक भी न हिला.
वह बस प्रतीक्षा करता रहा,
करता रहा, करता रहा.



फिर उसे निकट आती पदचाप सुनाई दी.
वह ध्यान से सुनने लगा,
और कुछ ही पलों बाद उसे
एक छोटा भेड़िया दिखाई दिया,
जो ऊपर रखा मांस सूँघ रहा था.
“दूर हटो इस मांस के टुकड़े से,”
रनिंग आउल चिल्लाया.



और छोटा भेड़िया
हवा में पाँच फुट ऊपर उछला.

“किसने कहा यह?” छोटे भेड़िये ने पूछा.
“मैंने!” रनिंग आउल ने कहा.
“यह मांस का टुकड़ा मैंने
गरुड़ पकड़ने के लिए रखा है!”
छोटे भेड़िये ने डालियों और झाड़ियों के
बीच से, नीचे छिपे
रनिंग आउल को देखा.
“क्या तुम एक आदिवासी हो?” उसने पूछा.
“हाँ,” रनिंग आउल बोला.
“क्या तुम्हें लगा कि मैं एक मछली हूँ?”
“तुम तो बहुत छोटे हो,” भेड़िये ने कहा.
“अगर यह मांस का टुकड़ा लेकर
मैं भाग जाऊं तो?”



“मैं गाँव के सारे लोगों को
तुम्हारे पीछे लगा दूंगा,” रनिंग आउल बोला,
उसका सारा चेहरा मिट्टी से भर गया था.
“मेरे पिता और सारे भैंस के शिकारी
तुम्हारे पीछा करेंगे और
तुम्हें पकड़ लेंगे और
तुम्हारी चमड़ी को
अपने तंबू पर टाँग देंगे!”





छोटे भेड़िया कुछ देर सोचता रहा.
“आदिवासी लोग मुझे पागल
कर देते हैं,” उसने कहा
और वहां से चला गया.

रनिंग आउल ने कुछ देर और प्रतीक्षा की
और फिर हवा में उसने
फड़फड़ाने की हल्की सी आवाज़ सुनी.
यह आवाज़ थी:
व्हिश्श्श्श्श
व्हिश व्हिश व्हिश
फड़..फड़   फड़..फड़
फड़.....फड़   फड़....फड़
और अचानक एक गरुड़ उसके ऊपर
डालियों पर आ बैठा.

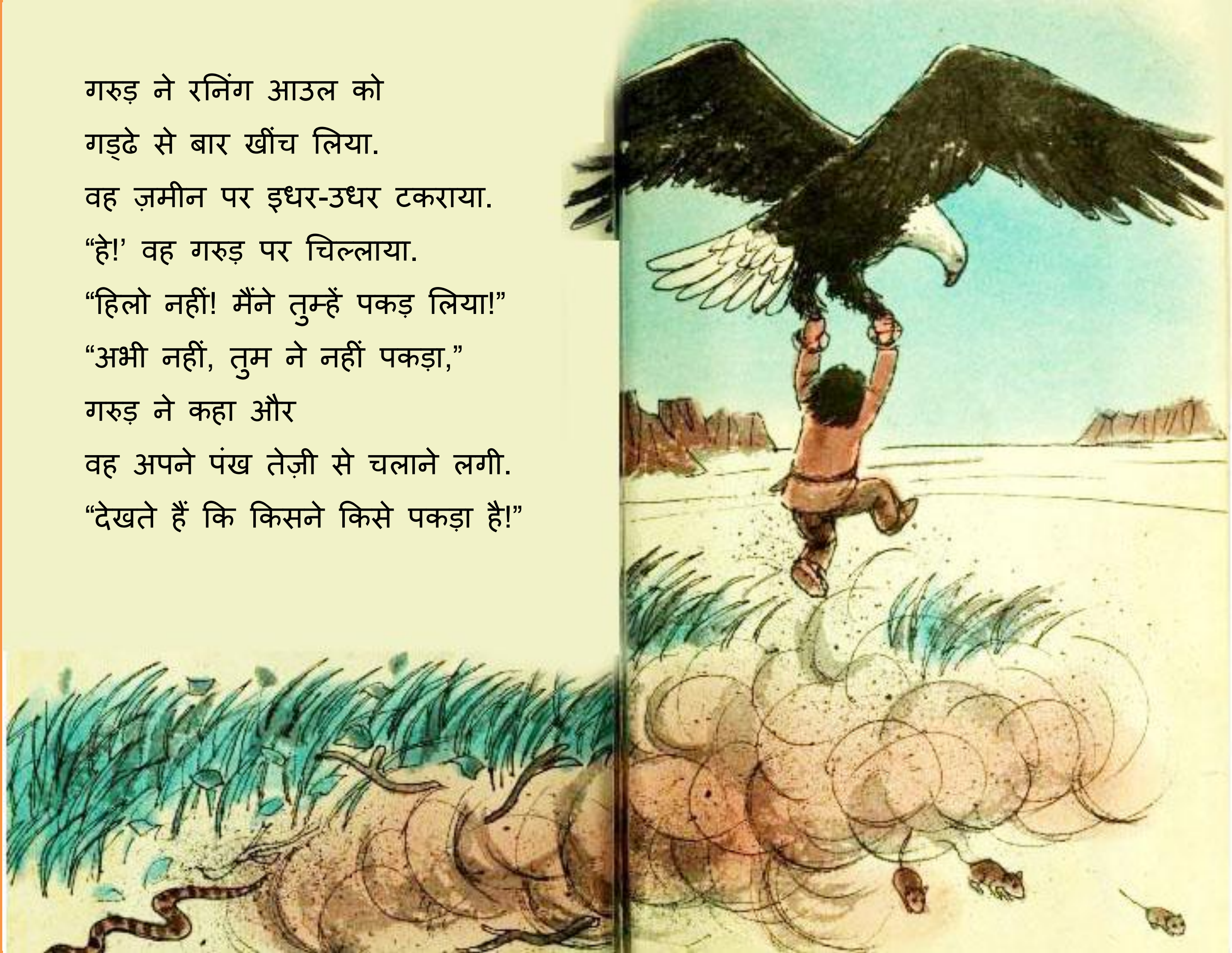


गरुड़ ने अपने पंख समेटे
और मांस को चोंच मारने लगा.
रनिंग आउल ने एक गहरी सांस ली
और तेज़ी से अपने हाथ झाड़ियों से



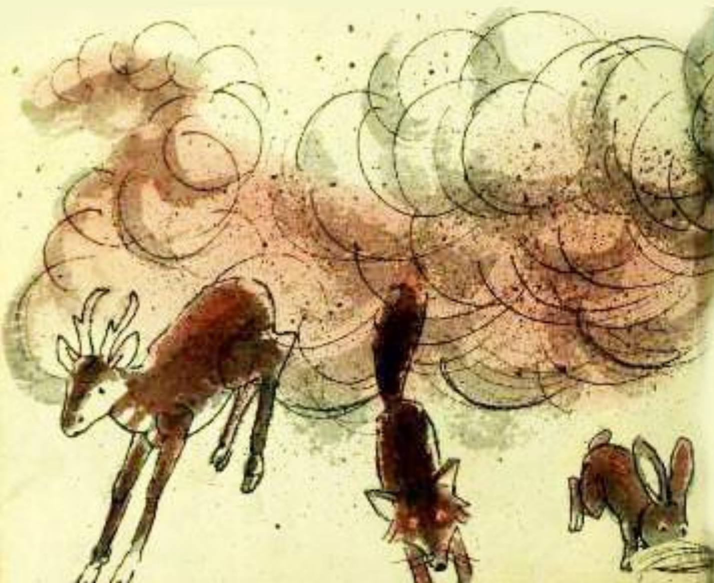


बाहर निकाले और गरुड़ का एक पंजा,
जितनी मज़बूती से वह पकड़ सकता था,
पकड़ लिया.
गरुड़ ज़ोर से चीखा
और उसने अपने पंख फड़फड़ाये.
सारी झाड़ियाँ और डालियाँ
यहाँ-वहाँ बिखर गईं.



गरुड़ ने रनिंग आउल को
गड्ढे से बार खींच लिया.
वह ज़मीन पर इधर-उधर टकराया.
“हे!’ वह गरुड़ पर चिल्लाया.
“हिलो नहीं! मैंने तुम्हें पकड़ लिया!”
“अभी नहीं, तुम ने नहीं पकड़ा,”
गरुड़ ने कहा और
वह अपने पंख तेज़ी से चलाने लगी.
“देखते हैं कि किसने किसे पकड़ा है!”

रनिंग आउल ने छोड़ना चाहा
लेकिन गरुड़ ने उसकी कलाइयों को
अपने पंजों में जकड़ रखा था.
वह ज़मीन से बार-बार टकराया
जिससे धूल का
गुबार सा उड़ने लगा.



और आखिरकार रनिंग आउल को पकड़े
गरुड़ हवा में उड़ने लगा



“मुझे छोड़ दो!” रनिंग आउल चिल्लाया.
“यह तो बस एक मज़ाक था!
मैं तुम्हें हानि पहुंचाने वाला नहीं था!”
“अच्छा मज़ाक था,” गरुड़ ने कहा.
“हम सब कभी इस पर खूब हंसेगे.”



रनिंग आउल ने नीचे देखा.
वह अपने गाँव के तंबू
देख सकता था.
लोग चींटियों जैसे
छोटे दिखाई दे रहे थे.
बहुत दूर, धूल में लगभग छिपा हुआ,
भैंसों का एक झुंड था
जिसका शिकार
उसके पिता और दूसरे लोग कर रहे थे.



“तुम मुझे कहाँ ले जा रहे हो?”
रनिंग आउल ने पूछा.
“तुम्हें पता लग जाएगा,” गरुड़ ने कहा.
“याद रखो, यह तुम्हारी योजना थी.”
“यह सब नहीं,” रनिंग आउल बोला.
“मेरे मन में तो कोई और ही बात थी.”
“च..च..च..च..” गरुड़ बोला.
“जो मिलता है उसे ही स्वीकार करना
पड़ता है.”
वह एक ऊंची, पथरीली चट्टान पर आये.

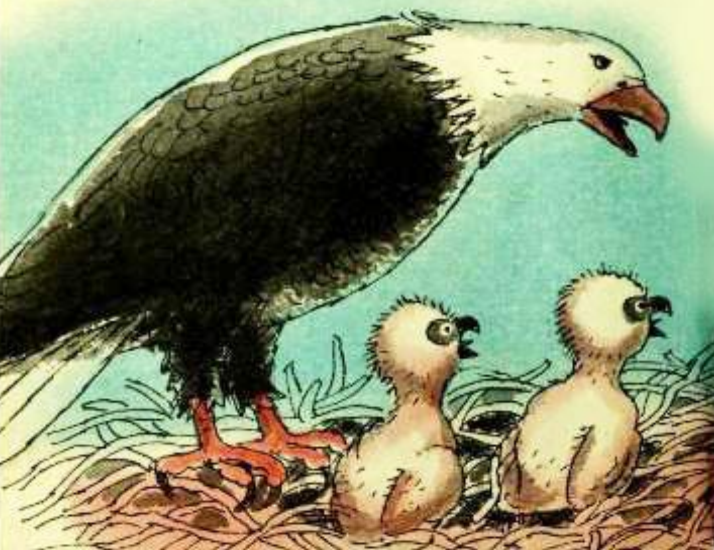
चट्टान के किनारे पर
छोटी लकड़ियों का एक बड़ा घोंसला था
और उस घोंसले में
गरुड़ के तीन बच्चे थे.
जैसे ही रनिंग आउल को
अपने पंजों से पकड़े
गरुड़ घोंसले के निकट आया,
तीनों बच्चों ने गर्दनें तान कर
अपनी चोंचें खोल लीं.



“सबसे पहले मैं खाऊँगा!”
एक गरुड़-बच्चे ने कहा.
“पिछली बार राल्फ ने पहले खाया था!”
“अभी उसे मत खाओ, मारियन,”
बड़े गरुड़ ने कहा.
“पहले मैं उसकी बात सुनना चाहता हूँ.”
“मैं तुम्हें कोई कष्ट नहीं
देना चाहता था!” रनिंग आउल बोला.
“मुझे तो बालों में लगाने के लिए
सिर्फ एक पंख चाहिए था!”



"सिर्फ एक पंख पाने के लिए
तुम ने इतनी मुसीबत झेली,"
बड़ा गरुड़ बोला.
"क्या तुम सच कह रहे हो कि
तुम कुछ और नहीं करना चाहते थे?"
"मैं क्या कर सकता था?"
रनिंग आउल ने कहा.
"तुम मुझे से बहुत बड़े हो!"



गरुड़ का एक बच्चा चुपके से
रनिंग आउल के पीछे आ गया
और उसने अपनी चोंच खोली.
"ओटो, दूर हो जाओ!"
बड़े गरुड़ ने कठोरता से कहा.
"मैंने कहा न कि जब तक
हम इसकी बात नहीं सुन लेते
इसे छूना नहीं!"
ओटो ने चोंच बंद कर ली
और कुछ न बोला.



“मेरे पिता ने कहा था कि शिकार करने
के लिए अभी मैं बहुत छोटा हूँ,”
रनिंग आउल ने कहा.
“मुझे लगा कि अगर मेरे पास
गरुड़ का पंख होगा तो
मैं शिकार कर पाऊँगा.
बस मैं एक पंख लेना चाहता था.”
गरुड़ उसे देखता रहा.
“तुम ध्यान से नहीं सोचते,
क्या सोचते हो?” आखिरकार वह बोला.



“मुझे लगा कि मैं सावधान था,”
रनिंग आउल ने कहा.
“मेरा मतलब है कि
तुम दूर की नहीं सोचते.
तुम यह नहीं सोचते कि
आगे क्या हो सकता है.”
“ऐसा तो नहीं है,”
रनिंग आउल ने उत्तर दिया.



"तुम सीख जाओगे."
गरुड़ ने घोंसले के आसपास देखा और
उसे गिरा हुआ एक पंख दिखाई दिया.
"यह लो," रनिंग आउल को
वह पंख देते हुए उसने कहा.
"यह पंख तुम्हें
तुम्हारे पहले पाठ की
याद दिलाता रहेगा.
इसे तुम अपने बालों में लगा सकते हो."
"धन्यवाद," रनिंग आउल ने कहा.
"मुझे तो बस यही चाहिये था."



घर पहुँचने के लिये उसे लंबा रास्ता चल कर पार करना पड़ा.





"एक गरुड़ ने मुझे दिया,"
रनिंग आउल ने उत्तर दिया.
"कौन सा गरुड़?" पिता बोले.
"यह एक लंबी कहानी है,"
रनिंग आउल ने अपने बिस्तर में
घुसते हुए कहा.
"मैं आपको कल सुनाऊँगा."
इसके पहले कि पिता कुछ
और पूछते,

वह घर पहुंचा.
उसके पिता और अन्य लोग भैंस का
शिकार कर पहले ही लौट आये थे.
उसके पिता ने रनिंग आउल के
बालों में लगा गरुड़ का पंख देखा.
"यह तुम्हें कहाँ मिला?" उन्होंने पूछा.





वह गहरी नींद सो गया.

समाप्त